Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor: 4.081
Volume-12, Issue-3, December-2018 www.researchguru.net

# शेखर जोशी के कथा साहित्य में अजनबीपन की अनुभूति

डॉ मृदुल जोशी
शोध निर्देशिका, कन्या गुरुकुल परिसर, गुरुकुल कांगड़ी वि"वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड

तनुजा राणा
शोध छात्रा, हिन्दी विभाग, कन्या गुरुकुल परिसर, गुरुकुल कांगड़ी वि"वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड

**सारांश**– आज व्यस्तता एवं भागदौड़ भरी इस जिन्दगी में प्रत्येक व्यक्ति भीड़ में भी खुद को अकेला महसूस करता है। आधुनिकता के जिस मार्ग पर आज मनुष्य चल पडा है वहाँ उसे सिर्फ अजनबी एवं अकेलेपन के सिवा कुछ हाथ नहीं लगा। दुनिया की इस चकाचौंध व मनुष्य की महत्वाकांक्षाओं ने उसे अपने परिवार व समाज से दूर कर दिया है। दिखावे व पाश्चात्य रहन–सहन इसका बडा कारण है। परिवार व समाज की इकाई कहा जाने वाला मनुष्य आज अपने समूह से ही पृथक् हो गया है और समाज में व्याप्त इस नई समस्या अजनबी एवं अकेलेपन से जूझ रहा है। मनुष्य व समाज के लिए यह चिंता का विषय है।

नई कहानी सम्बन्धों के टूटने की कहानी है। इस कथा संसार में सारे सम्बन्धों से विछिन्न व्यक्ति अधिकाधिक अकेला और अजनबी होता चला गया। पिछली पीढ़ी के प्रति घृणा, अविश्वास और पारस्परिक परिचय, अनिश्चय, नई कहानी इसी यथार्थ की प्रामाणिक अभिव्यक्ति है।[1] इस युग में प्रत्येक व्यक्ति दुनिया की भीड़ में अपनी अलग पहचान बनाने को आतुर दिखाई देता है जिसके लिए वह संघर्ष करता है। परन्तु जब वह अपनी पहचान बनाने में विफल हो जाता है तो तब यह स्थिति उसे संसार से और मनुष्यों से विमुख व अलग–थलग कर देती है। वह खुद को अकेलेपन की खाई में धकेल देता है जिससे वह शायद ही बाहर आ पाता है और इसी को नियति का नाम देकर स्वीकार कर संसार की भीड़ में अजनबी बन गुम हो जाता है।

मशीनीकरण व यान्त्रिक युग में मनुष्य अपने परिवार को भूल गया है तथा अपने ही घर में अजनबी जीवन जीता रहता है। नई पीढ़ी इस बनावटी दुनिया के फेर में फँसती जा रही है। पहले व्यक्ति मिट्टी के कच्चे घरों में रहता था तो अपनी भूमि व संस्कारो के निकट था किन्तु अपनी भूमि को त्याग बड़े–बड़े आलीशान बंगलों व महलों में रहने की चाहत ने उसे अपनी मिट्टी व संस्कारों से तो दूर किया ही है साथ–साथ परिवार से भी दूर कर दिया है। 'आज मनुष्य अपने एकाकीपन में छिपा अपने परिवेश से कटता जा रहा है। परिवार का आश्रय टूट चुका है। अब कोई आदर्श ऐसा नहीं जिसके लिए मनुष्य संघर्ष करना आवश्यक समझे, क्योंकि तमाम आदर्श झूठे सिद्ध हो चुके हैं।'[2]

अजनबी एवं अकेलेपन का सबसे बड़ा कारण मनुष्य की कभी न खत्म होने वाली अनगिनत आकांक्षाएँ हैं। आधुनिककाल को वैज्ञानिक काल व अविष्कार काल भी कह सकते हैं। मनुष्य से ज्यादा विश्व में नई–नई मशीनें, यंत्र आदि देखने को मिलते हैं, जिसके प्रभाव स्वरूप मनुष्य भी एक मशीन बनता जा रहा है। मशीनें बात नहीं कर सकतीं, सोच–विचार नहीं सकतीं, वे सिर्फ दिये गये निर्देशानुसार कार्य पद्धति पर कार्य करती हैं और आज के समय में मनुष्य की भी यही स्थिति हो चुकी है। 'हर व्यक्ति अपने में अकेला है और शायद यह अकेलापन ही उसकी वैयक्तिक उपलब्धि है।'[3] यह मशीनों का जाल उसने अपनी सुविधओं के लिए बनाया था किन्तु वह अपने ही द्वारा बनाये इस जाल में फँस कर रह गया है। उसके पास न तो खुद के लिए समय है और न ही अपने परिवार के लिए। मोबाइल फोन का आविष्कार व्यक्ति से व्यक्ति को जोड़ने के लिए हुआ था परन्तु आज मनुष्यों के बीच सबसे ज्यादा दूरी इसी आविष्कार की वजह से आई है। पहले व्यक्ति रोज़गार की खोज में घर से दूर देश–विदेश जाता था तो उससे सम्पर्क करना व उसकी खैर–खबर लेना बहुत मुश्किल होता था किन्तु तब भी वह अपने परिवार के निकट होता था और आज निकट होते हुए भी वह बहुत दूर है। यहाँ तक की भरी महफिलों में भी व्यक्ति अपने फोन में व्यस्त रहता है। ऐसा इसलिए है कि आधुनिकता के फेर में व्यक्ति सोशल मीडिया में अधिक रम गया है जैसे फेसबुक, व्हाट्सएप्प, इनस्टाग्राम आदि। वह इन पर वाह–वाही बटोरना चाहता है परन्तु उसे इन सब से अन्त में सिर्फ सूनापन, अकेलापन और अजनबीपन ही हाथ लगती है।

**डॉ0 सुरेश सिन्हा** ने 'अकेलेपन को व्यक्ति की नियति माना है। जो वर्तमान समय में उसके लिए अनिवार्य बन चुकी है– अकेलेपन आधुनिक मनुष्य के लिए अनिवार्य नियति माना गया है, क्योंकि चेतना की वृद्धि और अपने वर्तमान अस्तित्व के बारे में उसकी निरन्तर सजगता उसे समुदाय से सम्पृक्त कर देती है।'[4]

मनुष्य समाज व परिवार की प्रथम इकाई है, जिसके बिना समाज व परिवार तो क्या दुनिया की भी कल्पना नहीं की जा सकती है। परन्तु आज जिस परिवर्तित मानसिकता और मनोवृत्तियों का प्रभाव व्यक्ति जीवन पर पड़ रहा है वह एक विचारणीय समस्या बनती जा रही है। व्यक्ति जीवन आधुनिकता के इस वातावरण में मानसिक एवं शारीरिक रूप से असहाय हो चुका है। जिसमें सबसे ज्यादा पुरानी पीढ़ी ही प्रभावित हो रही है। बुजुर्ग व्यक्ति अपने भरे–पूरे परिवार में भी अकेलेपन के दंश को झेल रहे हैं। जिस परिवार को वे अपने बुढ़ापे का सहारा व एकान्त बाँटने का सहारा समझते हैं वही सहारा उनके लिए अकेलेपन और अजनबीपन का माध्यम बनता जा रहा है।

शेखर जोशी जी ने मनुष्य से जुड़े छोटे से छोटे पक्ष को भी अपनी कहानियों में उजागर किया है। जिनमें से अजनबी और अकेलेपन की अनुभूति भी एक पक्ष है। **'संवादहीन'** कहानी की पात्रा ताई का हँसता–खेलता परिवार था। पति की मृत्यु और बच्चों के बड़े होने पर बेटियों की शादी हो गई और बेटे अपनी पत्नियों तथा बच्चों को साथ लेकर गाँव का मोह त्याग शहर जाकर बस गये। अब बड़े घर में सिर्फ ताई ही अकेली बची रह गई। अच्छे दिन बीतते समय न लगा था कि ताई के जीवन में यह अकेलापन दस्तक दे चुका था। ताई की स्थिति का वर्णन करते हुए लेखक ने लिखा है– 'अपनी अकेली जान के लिए ताई दो जून का एक जून चूल्हा फूँक लेती, व्रत–उपवास के बहाने चौका– चूल्हा टाल जाती, पेट की समस्या उनके लिए कभी समस्या नहीं रही पर सूने घर की भाँय–भाँय जैसे उन्हें काटने को दौड़ती थी।'[5]

आगे शेखर जो"ाी लिखते हैं ''कुछ समय के लिए उनके इस अकेलेपन को एक मिट्ठू तोते ने दूर कर दिया था, जोकि गनपनत द्वारा पहाड़ से लाया गया था। ताई दिन भर उससे बात करती और उसे गीता के दो–चार श्लोक भी रटा दिये थे। किन्तु उनका यह सहारा भी जगन मास्टर की बेवकूफी से दूर हो गया– ताई अपने मिट्ठू को गुहारकर थक गई लेकिन उनके सूनेपन का साथी न जाने किन अमराइयों में घूम रहा होगा।'[6]

**'कोसी का घटवार'** कहानी भी इसी आशा–निराशा से जुड़ी कहानी है। जिसमें गुसांई के जीवन के एकाकी और अकेलेपन को अनुभव के रंगों से सजाकर जोशी जी ने चित्रित किया है। गुसांई गाँव का एक भोला–भाला शर्मीला लड़का है। जो फौजी–पैन्ट पहने की चाहत में फौज में भर्ती हो गया था। वह पास के ही गाँव की लछमा नाम की एक लड़की से प्रेम करता था। गुसांई के माँ–बाप, भाई–बहिन नहीं थे सिर्फ अपना कहने वाले एक चाचा ही थे। जिस वजह से लछमा के पिता गुसांई का विवाह प्रस्ताव यह कहकर ठुकरा देते हैं ''जिसके आगे–पीछे भाई–बहिन नहीं, माई–बाप नहीं, परदेश में बंदूक की नोक पर जान रखने वाले को छोकरी कैसे दे दें हम?''[7] इस बात से निराश गुसाई शादी नहीं करता और जिन्दगी भर के लिए अकेलेपन को गले लगा लेता है। लेखक ने अत्यन्त चित्ताकर्षक भाषा में अभिव्यक्ति दी है– ''सूखी नदी के किनारे का यह अकेलापन नहीं, जिन्दगी–भर साथ देने के लिए जो अकेलापन उसके द्वार पर धरना देकर बैठ गया है वही। जिसे अपना कह सके, ऐसे किसी प्राणी का स्वर उसके लिए नहीं। पालतू कुत्ते–बिल्ली का स्वर भी नहीं।'[8] गुसांई को हमेशा यह अकेलापन काटने को आता था। इस दुनिया में अपना कहने वाला उसके पास कोई नहीं था। इस अकेलेपन के कारण उसे ऐसा प्रतीत होता था मानों प्राणी तो क्या पालतू पशु भी उसके साथी नहीं बन सकते।

इस यान्त्रिक युग में व्यक्ति के पास एक दूसरे का दुःख बाँटना तो दूर उसे सुनने का भी समय नहीं है। कटु परिस्थितियों के कारण अपने परिवेश से कटे हुए तथा सहानुभूति के अभाव में व्यक्ति अन्तर्मुखी हो जाता है। बाहरी संघर्ष एवं आन्तरिक कुंठा व्यक्ति को शून्यता की सी स्थिति में पहुँचा देती है। यह शून्यता की स्थिति उसे अलगाववादी बना देती है।[9] इस मनोवृत्ति का शिकार मुख्य रूप से निम्न व मध्य वर्ग हुआ है। जिसका कारण उसकी अधूरी इच्छाएँ हैं, जिन्हें पूरा करने में वह असमर्थ रहता है और जिन्दगी के थपेड़ों को सहता हुआ निराशा की ओर खिंचा चला जाता है। नगरों में निवास कर रहा व्यक्ति अनेक ऐसी महत्वकाक्षाएँ पाल लेता है जिन्हें वह अपनी जिन्दगी में कभी पूरा नहीं कर सकता। पेट भर जाये और आवश्यक जरूरतों की पूर्ति हो जाये उसके लिए वही बहुत बड़ी बात है। निम्न एवं मध्य वर्ग की इस हालत का जिम्मेदार उच्च वर्ग है

जिसे पूँजीपति वर्ग भी कहते हैं, क्योंकि निम्न वर्ग उच्च वर्ग के अधीन कार्य करता है। यहाँ उसका शोषण किया जाता है। निम्न वर्ग पूँजीपतियों के शोषण से बच पाये तो अपनी इच्छाओं की पूर्ति शायद कर भी सकता है। उच्च वर्ग की मरी हुई आत्माओं से वह आत्मीयता की उम्मीद रखता है, जिसके लिए वह तरस जाता है। जिस कारण उसके मन में धीरे–धीरे घुटन उत्पन्न होने लगती है। अकेलेपन से जूझता हुआ वह प्राण त्याग देता है। इसी अकेलेपन से ग्रसित एक स्त्री की कहानी का वर्णन करती शेखर जोशी की **'विसर्जन'** कहानी है। गाँव में रह रही तारी की भाभी भी इस अकेलेपन को साथ लिए इस दुनिया से चली जाती है– ''भाभी ने जीवन के अनेक वर्ष इसी गोठ में काट दिये थे और अकेलेपन, बुढापे और ज्वर–बुखार से जूझते हुए अन्त में वहीं प्राण त्याग दिये थे।''[10] भाभी की मृत्यु की खबर मिलने पर तारी गाँव चला आता है जहाँ लोग उसको सहानुभूति देने के लिए आते हैं। जब तक भाभी का पिण्डदान नहीं होता तब तक तारी गाँव में ही रहता है। शेखर जोशी ने इस पीड़ा को बेहद मार्मिकता से अभिव्यक्ति दी है– ''बारहवें दिन भाभी के श्राद्ध का अन्तिम पिण्डदान करने के बाद जब तारी ने तिलांजलि दी तो उसे अपने अन्दर एक भयंकर शून्य का अनुभव होने लगा। उस सर्पिल रेंगती नदी के किनारे शिलाखण्ड पर बैठे–बैठे उसे लगा, जैसे अंजली में तिल–कुश लेकर उसने भाभी को नहीं बल्कि गाँव के तारी को विसर्जित कर दिया है जो आज से सबके लिए अजनबी हो जाएगा।''[11] गाँव से अपनी जड़ें ख़त्म करने के उपरान्त बाहर गये लोगों को गाँव में पहचानने वाला कोई नहीं होता। वे गाँव वालों के लिए अजनबी बनकर रह जाते हैं हमेशा–हमेशा के लिए। व्यक्ति जब थक कर निराशा एवं कुण्ठा से ग्रसित हो जाता है तो वह मानसिक रोगों की चपेट में आ जाता है। निराशा एक मानसिक रोग है जिसे 'मैलंकेलिया' कहते हैं मैलंकेलिया से ग्रस्त व्यक्ति वर्तमान की अपेक्षा भविष्य के सम्बन्ध में अधिक सशंक भयाक्रांत और निराश रहता है।[12] जिसके चलते वह खुद की जीवन लीला समाप्त करने की सोचता है।

महानगरों के घुटनभरे तथा बनावटी परिवेश में व्यक्ति को अधिक अजनबीपन महसूस होता है। गाँव से आया हुआ व्यक्ति शहरी परिवेश में खुद को अकेला पाकर एकाकी अनुभव करता है। शहरी चहल–पहल व मनुष्यों की अत्यधिक भीड़ में भी वह एकाकीपन अनुभव करता है। **दाज्यू** कहानी में लेखक ने इस भावना को समीचीन शब्दों में अभिव्यक्ति दी है– ''सैकड़ों नर–नारियों के बीच जनरवमय वातावरण में रहकर भी सूनेपन की अनुभूति होती है। लगता है, जो कुछ है वह पराया है, कितना अपनत्वहीन!''[13] नगरों में किसी को किसी से कोई मतलब नहीं होता। कहने को तो मनुष्य सामाजिक प्राणी है पर अब वह उसी सामाजिकता व समाज से दूर होकर जीना चाहता है।

निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि आज के इस दौर में मनुष्य जीवन में यह समस्या अत्यन्त जटिल बनी हुई है। समकालीन लेखकों ने इस समस्या को अनुभव करते हुए अभिव्यक्त किया है। इनमें से एक लेखक शेखर जोशी भी हैं। अनेक कहानियों में इस समस्या को अनुभव के रंगों से संजोकर उन्होंने बखूबी प्रस्तुत किया है।

**संदर्भ सूची**


1. एक दुनिया समान्तर, राजेन्द्र यादव, पृष्ठ 31
2. साहित्य और आधुनिक युग बोध, देवेन्द्र इस्सर, पृष्ठ 60
3. नई धारा, फरवरी–मार्च, 1966, भगवती चरण वर्मा, पृष्ठ 115
4. हिन्दी उपन्यास उद्‌भव और विकास, डॉ0 सुरेश सिन्हा, पृष्ठ 119
5. संकलित कहानियां, 'संवादहीन' शेखर जोशी, पृष्ठ 28
6. वही, पृष्ठ 32
7. 'कोसी का घटवार', प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर जोशी, पृष्ठ 19
8. वही, पृष्ठ 18
9. हिन्दी उपन्यास उद्‌भव और विकास, डॉ0 सुरेश सिन्हा, पृष्ठ 119
10. मेरा पहाड़, 'विसर्जन', शेखर जोशी, पृष्ठ 150
11. वही, पृष्ठ 153
12. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धान्त, मैथिली प्रसाद भारद्वाज, पृष्ठ 263
13. संकलित कहानियाँ, 'दाज्यू', शेखर जोशी, पृष्ठ 52